प्रसार साहित्य : एफ.पी.ए.आर.पी.-7

एकान्तर नाली सिंचाई विधि अपनाकर गन्ने में पानी बचाएँ

डी. वी. यादव, आर. पी. वर्मा, कामता प्रसाद,
ए. के. साह, राजेन्द्र गुप्ता एवं के. पी. सिंह

भाकृअनुप
ICAR

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान
रायबरेली रोड, पोस्ट - दिलकुशा,
लखनऊ - 226 002, उत्तर प्रदेश

साधारणतयः किसान प्रवाह विधि से सिंचाई करते हैं जिससे पूरे खेत में पानी भर दिया जाता है। इस प्रकार सिंचाई करने से भूमि की सतह से काफी पानी भाप बन कर उड़ जाता है। एकान्तर नाली सिंचाई विधि में पूरी भूमि की सतह को पानी नहीं दिया जाता है। इस विधि में गन्ने की हर दो पंक्तियों के बाद (एकान्तर पंक्ति) वाले खाली स्थान में नालियाँ बनाई जाती हैं और इन्हीं नालियों द्वारा सिंचाई की जाती है। इस प्रकार गन्ने की जिन दो पंक्तियों के बीच में नाली नहीं बनती है वह जगह सूखी रहती है जिससे 30-40 प्रतिशत तक सिंचाई जल की बचत हो जाती है। इस बचे हुऐ पानी को दूसरे खेतों की सिंचाई के लिए उपयोग किया जा सकता है। गन्ने की बुवाई समतल विधि से करते हैं तथा गन्ने के जमाव के बाद इसकी प्रत्येक दो पंक्तियों के बाद की खाली जगह में 45 सेंटीमीटर चौड़ी तथा 15 सेंटीमीटर गहरी नालियाँ बना देते हैं और इन्हीं नालियों के द्वारा सिंचाई करते हैं।

कार्य विधि

- खेत की तैयारी अच्छी तरह से करें।
- संस्तुत प्रजाति के स्वस्थ गन्नों से 3 या 2 आँख के टुकड़े काटें।
- बावस्टीन की 200 ग्राम मात्रा का 100 लीटर पानी में घोल बनायें।
- गन्ने के कटे हुए टुकड़ों को इस घोल में 10-15 मिनट तक डुबोयें जिससे बीज द्वारा फैलने वाली बीमारियों की रोकथाम हो सके।

- शरद्कालीन गन्ना बुवाई के लिए 90 सेन्टीमीटर की दूरी पर 12 से 15 सेंटीमीटर गहरे कूँड़ बनाएँ।
- बसंतकालीन गन्ना बुवाई हेतु 75 सेंटीमीटर की दूरी पर 12-15 सेंटीमीटर गहरे कूँड़ बनाएँ।
- उपचारित गन्ना टुकड़ों को अँखुएं से अँखुआ या सिरे से सिरा मिलाकर कूँड़ों में बोऐं।
- क्लोरपाइरीफॉस 20 ई.सी. की 5 लीटर मात्रा को 1500 से 1600 लीटर पानी में मिलाकर घोल बना लें, यह घोल एक हेक्टेयर खेत के लिए पर्याप्त है।
- क्लोरपाइरीफॉस के इस घोल को कूँड़ों में टुकड़ों के ऊपर हजारे द्वारा डालें जिससे दीमक, जड़ बेधक व अंकुर बेधक से बचाव हो सके।
- बुवाई के तुरंत बाद, खेत में पाटा लगाएं जिससे गन्ने के टुकड़े ढक जाएं।
- गन्ने का जमाव होने के बाद, गन्ने की हर दो पंक्तियों के बाद की खाली जगह में 45 सेंटीमीटर चौड़ी तथा 15 सेंटीमीटर गहरी नालियाँ बनायें।
- इन्हीं एकान्तर नालियों में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।

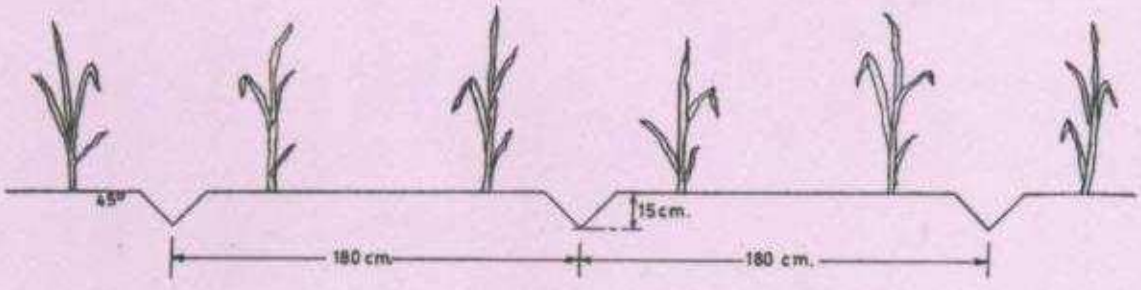

- नालियों में पानी उतना ही लगायें जिससे कि नालियों के ऊपर से पानी बहने न पाए।
- आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई करते रहें।
- पहली सिंचाई के बाद, उचित ओट होने पर 100 किलोग्राम यूरिया, गन्ने की पंक्तियों के किनारे-किनारे डालें व गुड़ाई करें।
- मानसून शुरू होने से पहले, 25 दिनों के अन्तराल पर एकान्तर नालियों द्वारा 4 से 5 बार सिंचाई करें।
- जून के तीसरे सप्ताह में 100 किलोग्राम यूरिया प्रति हेक्टेयर की दर से गन्ने की पंक्तियों के किनारे-किनारे डालें तथा गुड़ाई करें।
- चोटी बेधक की रोकथाम हेतु जून के अंतिम सप्ताह में 33 किलोग्राम फ्यूराडान 3 जी प्रति हेक्टेयर की दर से गन्ने की जड़ों के पास थानों के किनारे-किनारे डालें।
- आवश्यकतानुसार फसल की कीड़े एवं बीमारियों से सुरक्षा करें।
- मानसून शुरू होने से पहले गन्ने में मिट्टी चढ़ायें।
- अगस्त के पहले या दूसरे सप्ताह में प्रत्येक थान के गन्नों को आपस में बँधाई करें।
- सितम्बर के महीने में आमने-सामने की पंक्तियों के गन्ना थानों की आपस में कैंचीनुमा बँधाई करें जिससे गन्ने को गिरने से बचाया जा सके।

- बची हुई गन्ने की निचली सूखी पत्तियों को निकालें।
- गन्ने की अच्छी उपज तथा पेड़ी के अच्छे फुटाव हेतु गन्ने की कटाई ज़मीन की सतह से करें।

लाभ

- इस विधि से सिंचाई करने से 35-40 प्रतिशत सिंचाई जल की बचत होती है।
- सिंचाई जल उपयोग क्षमता में 60-65 प्रतिशत तक की बढ़ोत्तरी हो जाती है।
- खरपतवारों का काफी हद तक नियन्त्रण हो जाता है।
- कम पानी से गन्ने की सामान्य उपज प्राप्त हो जाती है तथा गन्ने की गुणवत्ता में भी कमी नहीं होती है।
- खरपतवार नाशी रसायन और सिंचाई जल का कम से कम प्रयोग के कारण उत्पादन लागत कम हो जाती है।
- किसानों को अधिक लाभ मिलता है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

निदेशक

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान

पो. आ. : दिलकुशा, लखनऊ

फोन : 0522-2480726

ई-मेल : iisrlko@sancharnet.in, फैक्स नं. : 0522-2480738

army printing press

www.armyprintingpress.com

Lucknow (0522) 6565333